The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"समसामयिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षित युवा बेरोजगारी की समस्याओं का एक सैद्धांतिक विश्लेषण"

नेहा

श्री लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, गोंडा
(अवध विश्वविद्यालय)

प्रोफेसर, (श्रीमती) शशि बाला

समाजशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, गोंडा
(अवध विश्वविद्यालय)

प्रस्तावना:–

शिक्षित युवा समस्याएं:– शिक्षित युवा समस्या किसी क्षेत्र विशेष की समस्या नहीं है। यह बहुत बड़ी विश्वव्यापी समस्या है। शिक्षित युवा समस्याओं में बेरोजगारी, निम्न सामाजिक – आर्थिक जीवन स्तर, उच्च प्रस्थिति को प्राप्त ना कर पाना, आदि प्रमुख समस्याएं हैं, हमारे देश में, समाज में प्रतिवर्ष लाखों करोड़ों युवा शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि ये युवा शिक्षा क्यों ग्रहण करना चाहते हैं? क्योंकि उन्हें पता है कि शिक्षित होकर ही हम अपना, समाज और देश का विकास कर पाएंगे। शिक्षा के अभाव में देश का विकास तो दूर की बात हम खुद का विकास भी नहीं कर सकते हैं इन शिक्षित युवाओं की समस्याओं में शिक्षित बेरोजगारी ही सबसे बड़ी समस्या है और बेरोजगारी के कारण ही अन्य समस्याओं का जन्म होता है। विश्व के मात्र 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल को समेटे हुए हमारा देश 102.7 करोड़ जनसंख्या का भरण – पोषण कर रहा है, जो विश्व की जनसंख्या का 16.6 प्रतिशत से भी अधिक है। इतने सीमित क्षेत्र में इतनी अपार जनसंख्या तथा सभी लोग रोजगार की तलाश में हो, यह एक विडंबना ही है और ऐसे में जब नई तकनीकी – प्रविधि (टेक्नोलॉजी) ने मानव श्रम का मूल्य घटा दिया हो तो सबको रोजगार मिले यह केवल एक कल्पित कामना ही है, जब समाज का कोई एक वर्ग जो अपनी सम – विषम

परिस्थितियों में किसी तरह से शिक्षार्जन करता है और डिग्री प्राप्त करता है तो समाज के विकास की धारा में शामिल हो जाता है या तो वह रोजगार कार्यालय में अपना नाम दर्ज कराकर भविष्य का चिंतन करता है।

शोध समस्या शिक्षित बेरोजगारी की परिभाषाः–

बेरोजगारी एक ऐसा विषवृक्ष है जो अपने सभी सह आयामो को भी विष उक्त कर देता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से कहे तो कह सकते हैं कि बेरोजगारी के कारण ही व्यक्ति का वैयक्तिक विघटन शुरू हो जाता है जिसकी अंतिम परिणीति सामाजिक विघटन के रूप में होती है। यदि हम बेरोजगारी पर दृष्टि दौड़ाए तो यह स्पष्ट होता है कि बेरोजगारी एक प्रमुख सामाजिक – आर्थिक समस्या है,जिसमें कोई व्यक्ति उचित योग्यता, पर्याप्त इच्छा और प्रयत्नों के बाद भी आजीविका की न्यूनतम सुविधाएं नहीं प्राप्त कर पाता है।

प्रोफ़ेसर पीगू ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि "किसी व्यक्ति को तभी बेरोजगार कहा जा सकता है कि जब उसकी रोजगार प्राप्त करने की इच्छा हो परन्तु उसको रोजगार ना मिले।"

प्रसिद्ध समाजशास्त्री फेयरचाइल्ड ने बेरोजगारी का आशय "सामान्य कार्यकाल के दौरान सामान्य मजदूरी पर और सामान्य दशाओं के अंतर्गत सामान्य श्रम शक्ति का पुरस्कार वाले काम से विवश और अनैच्छिक प्रथक्करण होने का है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बेरोजगारी से आशय किसी देश में उस परिस्थिति से होता है जिसमें कार्यशील उम्र के शारीरिक दृष्टि से योग्य व्यक्तियों की एक बड़ी संख्या कार्य करने की इच्छा रखते हुए भी प्रचलित मजदूरी दरों पर काम पाने में असमर्थ हो।

शोध समस्या के कारणः–

प्रस्तुत शोध समस्या में शोध समस्या के कारणों एवं स्वरूपों का अध्ययन करें तो इसके विभिन्न प्रकार सामने आते हैं जैसे, तकनीकी बेरोजगारी, चक्रीय बेरोजगारी, आसामायोजित बेरोजगारी, संरचनात्मक, मौसमी, ऐच्छिक, अनैच्छिक, बेरोजगारी आदि । इसमें व्यक्ति कार्य करने की दशा में है किंतु बाजार में उचित मजदूरी पर उसे कार्य नहीं मिल पाता। जैसे – एक डॉक्टर अस्पताल खोल कर बैठा है किंतु बीमार व्यक्ति ना आने पर भी वह बेकारी की परिभाषा

में नहीं आता। एक किसान कृषि कार्य कर रहा है और उसे घाटा हो रहा है फिर भी उसे बेकारी की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

शिक्षित बेरोजगारीः–

भारत में शिक्षित बेरोजगारी की संख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। यह एक बहुत ही घातक समस्या का सूचक है। फिर भी शिक्षित बेरोजगारी की संख्या के संबंध में कोई प्रमाणिक अनुमान उपलब्ध नहीं है। शिक्षित बेरोजगारी का मूल कारण भी वही है जो देश में सामान्य बेरोजगारी का मूल कारण है और वह आर्थिक विकास की मंद गति है। भारतीय समाज में अत्यधिक शिक्षा प्राप्त करने की प्रवृत्ति विद्धमान है। हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के पश्चात् नौकरी ना मिलने के कारण लोग स्नातक एवं परास्नातक शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

शिक्षित बेरोजगारी के उत्तरदायी कारकः–

1. आर्थिक विकास की मंद गति
2. जनसंख्या वृद्धि
3. दोषपूर्ण शिक्षा – पद्धति
4. भ्रष्टाचार
5. भाई – भतीजावाद
6. रोजगार तलाश करने वालों में तकनीकी शिक्षा तथा प्रशिक्षण तथा योग्यता का अभाव
7. शिक्षित लोगों की मांग व पूर्ति में असंतुलन आदि
8. तेजी मंदी का चक्र

शिक्षित युवा वर्ग की बेगारी दूर करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किए हैं –

1.वर्तमान शिक्षा प्रणाली को औद्योगिक शिक्षा प्रणाली में परिवर्तित किया जाए।

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कुटीर उद्योग धंधों और हस्त – कौशल की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए ताकि उसे भविष्य में रोजगार न मिलने वह पर स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका चला सके ।

3.कृषि आयोग कृषि शिक्षण के पक्ष में है वह प्राइमरी,उच्चतर माध्यमिक और उच्च शिक्षा सभी में कृषि शिक्षण को प्राथमिकता देने के पक्ष में है।

उपयुक्त परिस्थितियों के अभाव में कुशल इंजीनियरिंग प्रतिभा वाले युवक को बैंकों का काम करना पड़ता है, वकील को अध्यापन का काम करना पड़ता है। इसी तरह डॉक्टर,चित्रकार,कवि ,संगीतज्ञ आदि को विवश होकर किसी अन्य कार्य को अपनाना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याएं हमारे समाज के लिए अत्यंत चिंतनीय होती जा रही है। कौशल आधारित प्रशिक्षण की कमी और वित्तीय बाजार में आई मंदी के कारण युवाओं को मनचाही नौकरी मिलना मुश्किल हो गया।यदि हम भारत में बेरोजगारी की दुर्दशा के सुधारों और समाधानों के विषय में बात करें, तो देश में तकनीकी और व्यवसायिक संस्थानों की स्थापना होनी चाहिए और लोगों के मन में व्यवसायिक शिक्षा की ओर झुकाव होना चाहिए । यह समस्या तब पैदा होती जब डिग्री कोर्स की शिक्षा पाने के बावजूद कुशल नौकरी नहीं पा रहे हैं। इस समस्या के कारण भारत में कुशल श्रमिकों की कमी है एक सर्वेक्षण के अनुसार,शिक्षित युवाओं का 90 प्रतिशत कौशल की कमी के कारण बेरोजगार है,60 प्रतिशत संचार कौशल,25 प्रतिशत विश्लेषणात्मक कौशल की कमी के कारण और अपने संबंधित ज्ञान की कमी के कारण बेरोजगार है ।

शिक्षित बेरोजगारी के दुष्प्रभावः– बेरोजगारी के कारण व्यक्ति में निराशा चिंता तनाव जैसी समस्याओं का जन्म होने लगता है रोजगार पाने के लिए बेरोजगार इंसान मजबूरी में गलत रास्ता अपना लेता है जैसे – चोरी, डकैती, अपरहण,मद्यपान जैसे अपराधों में संलिप्त हो जाता है। एक अध्ययन के अनुसार शिक्षित बेरोजगार की वृद्धि के कारण अपराध दिन –प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।

निष्कर्षः–

शिक्षित बेरोजगारी गरीबी की तुलना में सबसे बड़ा अभिशाप है। देश के विकास के लिए शिक्षित युवा समस्याएं प्रमुख बाधा बनकर खड़ी है भारत में आंकड़ों के तहत बेरोजगारी की संख्या 10 करोड़ पार कर गई है। पश्चिम

बंगाल, जम्मू– कश्मीर,झारखंड, बिहार, उड़ीसा और असम जैसे राज्य बेरोजगारी से पीड़ित है और भारत के कुछ राज्य बेहतर हालात में है। जरूरत है सही दिशा,मार्गदर्शन,योजना और शिक्षा प्रणाली में बदलाव की। भारत सरकार कोशिशें कर रही है और आशा है कि जल्द ही उद्योग और विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार पाने की अवस्था में सुधार होगा।

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/20

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

नेहा एवं प्रो. (श्रीमती) शशि बाला

For publication of research paper title

"समसामयिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षित युवा बेरोजगारी की समस्याओं का एक सैद्धांतिक विश्लेषण"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year- 2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com